

508

卷之五

12981213141516171819202122232425262728293031323334353637383940414243444546474849505152535455565758596061626364656667686970717273747576777879808182838485868788899091929394959697989910010110210310410510610710810911011111211311411511611711811912012112212312412512612712812913013113213313413513613713813914014114214314414514614714814915015115215315415515615715815916016116216316416516616716816917017117217317417517617717817918018118218318418518618718818919019119219319419519619719819920020120220320420520620720820921021121221321421521621721821922022122222322422522622722822923023123223323423523623723823924024124224324424524624724824925025125225325425525625725825926026126226326426526626726826927027127227327427527627727827928028128228328428528628728828929029129229329429529629729829930030130230330430530630730830931031131231331431531631731831932032132232332432532632732832933033133233333433533633733833934034134234334434534634734834935035135235335435535635735835936036136236336436536636736836937037137237337437537637737837938038138238338438538638738838939039139239339439539639739839940040140240340440540640740840941041141241341441541641741841942042142242342442542642742842943043143243343443543643743843944044144244344444544644744844945045145245345445545645745845946046146246346446546646746846947047147247347447547647747847948048148248348448548648748848949049149249349449549649749849950050150250350450550650750850951051151251351451551651751851952052152252352452552652752852953053153253353453553653753853954054154254354454554654754854955055155255355455555655755855956056156256356456556656756856957057157257357457557657757857958058158258358458558658758858959059159259359459559659759859960060160260360460560660760860961061161261361461561661761861962062162262362462562662762862963063163263363463563663763863964064164264364464564664764864965065165265365465565665765865966066166266366466566666766866967067167267367467567667767867968068168268368468568668768868969069169269369469569669769869970070170270370470570670770870971071171271371471571671771871972072172272372472572672772872973073173273373473573673773873974074174274374474574674774874975075175275375475575675775875976076176276376476576676776876977077177277377477577677777877978078178278378478578678778878979079179279379479579679779879980080180280380480580680780880981081181281381481581681781881982082182282382482582682782882983083183283383483583683783883984084184284384484584684784884985085185285385485585685785885986086186286386486586686786886987087187287387487587687787887988088188288388488588688788888989089189289389489589689789889990090190290390490590690790890991091191291391491591691791891992092192292392492592692792892993093193293393493593693793893994094194294394494594694794894995095195295395495595695795895996096196296396496596696796896997097197297397497597697797897998098198298398498598698798898999099199299399499599699799899910001001100210031004100510061007100810091010101110121013101410151016101710181019102010211022102310241025102610271028102910301031103210331034103510361037103810391040104110421043104410451046104710481049105010511052105310541055105610571058105910601061106210631064106510661067106810691070107110721073107410751076107710781079108010811082108310841085108610871088108910901091109210931094109510961097109810991100110111021103110411051106110711081109111011111112111311141115111611171118111911201121112211231124112511261127112811291130113111321133113411351136113711381139114011411142114311441145114611471148114911501151115211531154115511561157115811591160116111621163116411651166116711681169117011711172117311741175117611771178117911801181118211831184118511861187118811891190119111921193119411951196119711981199120012011202120312041205120612071208120912101211121212131214121512161217121812191220122112221223122412251226122712281229123012311232123312341235123612371238123912401241124212431244124512461247124812491250125112521253125412551256125712581259126012611262126312641265126612671268126912701271127212731274127512761277127812791280128112821283128412851286128712881289129012911292129312941295129612971298129913001301130213

[illegible]

124

श्रीलक्ष्मी
॥ ९ ॥

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ सायदायिनमः ॥ यतो
सत्यततो श्रीलेयतो लक्ष्मीततो हरिः यतो हरिततो ध
र्मयतो धर्मततो जयः ॥ गवत्संयासत्यदत्ता श्रोतुं स
केल्लक्ष्मीनंदसत्यपि ॥ गताल्लक्ष्मीनंदसत्यपलं श्रुता नारा
यननंदसत्यपलं गतानारायनवसत्यपलं श्रुता धर्म

सी वा
॥ ९ ॥

नवसत्यपलं गता धर्मनवसत्यपलं श्रुतं सर्वदां जयजयिषु
॥ श्रीधर्म उवाच ॥ नो श्रीले कल्पोत्पत्तसमस्तं लोक नंदे
सकिंया च के वांछाया उत श्रो यज्ञा यातं ॥ यथेनं कल्पोत्पत्त
सेन क्वायनसमस्तं लोक उर्ध्वे जानं कं स विज्या उत न गति
किं न नयं मफु गुति द्वियां श्रुते गसला किं सि थूल उव

श्रीलक्ष्मी

॥ २ ॥

दशोथधेनं कायकूलपोलसे उथे इगतकं सविद्याज्ञाथ
खं कूलपोलस्यं कडा वृषसंज्ञ जुयमालधकं ॥ ॥ धने धर्म
नं आदे सदयकागुखं डे उग श्रीलक्ष्मीनं आदे सदना नोव
कूलपोलस्यं डे उग खजिनं काने विसारन डे हने जिचो
ने थाय समूलन सत्य दशोत्तं या के धनं लिधर्मदव

सं वा

॥ १ ॥

त्तं या के जे चोने ध्यने तो म दुर्लया के जे चोने मखुथ
त्तं या के लक्ष्मी मद यि वहनं मिसा जन या लयलक्ष्मी
सया श्री चोने ग्वत्तं श्री सुसूचि जुलं श्री त्तं या के जे चोने
तखु निखलत्तं सी सा या के चोने मखु निखलया लछे
सोग धे गधे धाल सा हि स्वयिल आऊ सई ला श्रीतयि

श्रीलक्ष्मी
॥ ३ ॥

ओहनंकोथासकापुयमहाओलं नृगाजदोचिऊओतय
यओलंहनंथदुल्लासखितितोल्तोलदयकाओजुययओ
लंहनसाधयलियाऊओचोऊलंहनंततिलाहाथरषा
लमसिस्यंनओलंनिश्चरधायहनंओसतमहिस्यंओ
ऊलंनिश्चलधायथतेअलक्षराधायजूलोथधिंऊ

संवा
॥ ५ ॥

मयाकेनेदुखयमखूपूनवीदहनंग्वलंसिमिसाजनया
सिल्लसोभाधमनिंवेवहरमजित्संथओथीथीयाके
थवकेससमथमूमात्वकंजुययओलंआयमसोस्यं
वययाकलंसंलिपिहपियाऊओनिदानयाऊतयमहा
ओलंहनंसाकमसाकवूकमवूकहतासनंनययओलं

श्रीलक्ष्मी
॥ ४ ॥

हनं पुरुषमनकस्यथ मज्जकनया श्रोत्रो हनं हि
थं पुरुषयाना बोला वचन त्रविद्या श्रोत्रयय गोत्वं ह
नं पुरुषमनकं स्पर्धम जु कनया श्रोत्रमज्जकलो स
ननं त्रिया वज्ज श्रोत्रं मिसा जनया ह वने ज्यात हि थं दू
हा श्रोत्रो गूति फुल श्रोत्रो त्रि श्रोत्रो थ श्रोत्रमनस वां द

सर्वा
॥ ४ ॥

श्री ३

श्री
जलसनं श्रुते गयमाननं वस्तु दूहा श्रोत्रसमं श्रोत्रो
जुको र्वा त्रि श्रोत्रो क मखाङ्ग गथे धाल साक्षा क मजन
सना खतया थं सदा श्रोत्रं त्रि श्रोत्रो थ थि इत्तं या के जे चो
ने मरुध कं लक्ष्मी नं धर्म या ह श्रोत्रे श्रोत्रे सदता ॥ ॥
इति धर्म लक्ष्मी संवादे स्त्रीनां श्रुत क्षरा कथा प्रथमो

श्रीलक्ष्मी
॥ ५ ॥

ध्याय १ श्रीधनउवाच - श्रीलक्ष्मी हृत्पालस्वाम्या
मोक्षलक्ष्मनयास्वीकृतानप्रसन्नजलो श्रीलक्ष्मेश्वराया
रवहृत्पालविज्यातायाय पाखंडने ईष्ट्या दशानि च
खंडकानामो प्रसन्नजयजयमालधकं धर्मनंश्रीशोदय
केलां खंडेतावत्पक्ष्मीनशोदसदता नो धर्महृत्पाल
धर्मनंश्रीशोदको

संका
॥ ५ ॥

सं २

लक्ष्मीशो जेतं कने हृत्पालस्वामि स्मारनं डेहने नृ
पायामूलखंडकने गवत्सया सत्यदतामोक्षया केजे वे
नेथानं लिमिसा जनया लयलक्ष्मन सोय गवत्संया
मिसा जननथ श्रीपूरुषया केसेराया कनक्रया क
हिथं मधूरवचन हाक पूरुषयामनसदृष्टवम

श्रीराम

॥ ६ ॥

ये दे के वांछाया कपुरुषयगिर्धे निरुजुला श्रवेया
कपुरुषयावांछागुलिरवंहकवपुरुषयावचन
देऊ श्रोचोइ थश्रीपुरुषं रवडननंदेवखडार्थे नाल
पाश्रोचोइ संहनं वसं थजूलपुरुषयाकिनि
याश्रोतिथेयमननं श्रोसं मिड निरुवतु जूलसनं

संवा

॥ ६ ॥

नियसंजूलसनं नयसजूलसंहयानयकेहयातिथ
के थश्रोसा मिनिं भोययक धकं हक संधाके जिचो
ने निश्चये धकं धीलेन श्राज्ञादय के लाहनं पुनर्वा
दय ज्ञात कालसंद श्रोने को थायति वायुडा श्रो थश्रो
संलाधन लाच का श्रो रारसियद श्रो लायाति न्यकर्म

श्रीलक्ष्मी

॥७॥

प

यायसूचिं वितयागव निकलंर कायात्र पूजायां य
केमै पुजा कर्म धून काओ वरुमा मभ ओपुरुषसे
वाधा यपुरुष नोप के धने हि ध धून का वरु निध
मनंयं ननय ध धै या कल सं या के जे चो ने था य नि
श्रय ध कल श्री नं श्री जो दय का थ हं तो सन नृ

संवा

॥७॥

यसूमा लथ या छे सनने ग धन सम्य नि दय का ओ वि
यसन गरत्र पूर सुट ॐ उ हो लू दय का ओ गु गर लि वा
छां या त उ गर लि वि य के य गर मू के सा स जा कि वा कू थ
कू थ पु मा न रा दय का ओ वि य ओ लं या छे स जि चो
ने नि श्रय ध कल श्री नं श्री धै या ह श्री ने श्री श दय का

श्रीलक्ष्मी
॥ ८ ॥

जूलो ॥ ॥ इति श्री धर्म लक्ष्मी सत्यादेसी यालक्ष्मन
कथा द्वितीयो ध्यायः ॥ १ ॥ ॥ लक्ष्मी स्य न धर्म संके
आज्ञा दत्तं नो धर्मं कलपोल आश्रो मि सा जन यालक्ष्म
नं रं काने धूने कलपोल संके युने या रं के ने इहा द
श्री. क उा व पु सं न जू य माल ध क लक्ष्मी न धर्म या ह शो संवा
ट

ने गो चल या ग धू लि क्षी ले या आ ज्ञा के. न श्रो धर्म नं धा
लं हे लक्ष्मी कलपोल संया प पूं ने या रं त्या के. ने ई क्षा दत्ता
आ जे नं कने कलपोल संधि स्तार नं उरु ने क यु लि न ग
र या मि सा ज न क। सा द श्रो ध मि सा ज न नं थ श्रो य
रु व श्रु ति नं म हि क हि धी त म नं नू जू श्रो सं हि धं वे

श्रीलक्ष्मी
॥ ५ ॥

लो वचन त्रविद्या श्री जू श्री संहर्त पुरुष या तं स्रह नखा
लमका उः संहर्त पुरुष मत कस्यं धम जु को न या श्री जू
श्री संहर्त दुहायि हा वा ले सं ला हा न नं का स्यं न या श्री जू
श्री संहर्त सनिल सन या श्री जू श्री संहर्त मता मदय का न या
था य स परि या हा न श्री द र म या क संहर्त लोक म य व संहर्त

संका
॥ ५ ॥

जो ग श्री श्री श्री य निस व स्र जू को का या श्री वि य म य
श्री संहर्त ध धि उः संहर्त मि सा ज न या लि धे मृ त्पू जू ल उः व
पू न जर्म स थ संहर्त ग धे जू ला धा ल सा जै न के उः हु ने पू
रु य म हि या पा य नं रु यि नी चा यि श्री त म न द्र जू ल
या या य न ला क ला क सा न दा य का श्री जू यि श्री पू रु

श्रीलक्ष्मी

॥ १० ॥

वयाताकोलावचन विद्यायापननुगोत्वसमद्विष्यं नो
नकायमफस्यं चोतिश्रोथश्रोपुरुषकोधनं सोयापा
यनं सासति कर्तुं लखात् जस्य सिलिकुतिमिरवापि
सिकुतिरवात्तजुयिश्रोथश्रोपुरुषयावचनमडेस्य
पुरुषयाके दोहोयायापनं थत्तं यागतिमलास्यं

संवा

॥ १० ॥

ताश्रोसिजपिश्रोतयं मफपिश्रोथश्रोपुरुषमतिकस्यं
थमजुकोतियायापनरिवाजर्नजुयाश्रोसारश्रोय
मालिश्रोहनं पुनजन्मसदरिडजुयमासिश्रोपुनर्कदम्
तक्षवस्तनयाश्रोजुयिश्रोत्वत्तं मिसाजननं थथीरुम्
कर्मयाताश्रोत्तं मिसाजनमृत्तुजुलडाश्रोपुनजन्म

श्रीलक्ष्मी

॥११॥

म. थ. संग. थे. जूला. धासा. जे. नं. क. ने. उ. हु. ने. थ. थि. इ. श्र.
व. श्र. जू. थि. श्रो. ध. कं. धर्म. नं. ल. क्ष्मी. या. ह. श्रो. न. आ. ज्ञा. द.
य. कं. जू. लो. ॥ इति धर्मलक्ष्मी संवादे स्त्रीनां पापयु-
क्तकथा नृति कोट्याय ॥ ३ ॥ श्रीलक्ष्मी उवाच ॥
आ धर्म आश्रो जे न मिसा जन या पाप खंडे ते धूने

संवा

॥११॥

आश्रो पुंन या खंडे ते उद्ध दशो निक डानं पसंन जूष
माल धकं क्ष्मी लेनं धर्म या के डे इति श्री धर्म उवाच
जो लक्ष्मी कृत फेल आरु मिसा जन या पुण्य या खंडे क
ने विसार नं डे रु ने गव स्र मिसा या धर्म दंडे मेलि
मषू थ श्रो पूरुष या के सम सती तीर्थ पूरुष स नूति

श्रीलक्ष्मी

॥ १२ ॥

ससमस्तं देवं ध्वं वृषूषसमस्तं धर्मं धर्मो पुरुषया त्मा
लहिया गुल्लं सलिल निदान याचके न्हेलमउत्तोलेल
हिय न्हेलमोल उग वृथमं देने पुरुष विना नं सूतं म
दुधुदुति न सेवा याय सुधा ते ओलंदा उग ओ पुरुष या
यादूकानितमस्कार याय सुधा त्स ॥ ॥ लहिय स्तन

सेवा

॥ १२ ॥

याचके यातलं स्व आदिन काया ओ विष याध या गु
तोल लाटका ओ विषे धया धया धास काने पुरुष न
धाके यायहन पुरुष यातृति चायको ओ तृति याति
तथा ओ सिलसंहाय धानं लि तित्य कर्म माल कता
ललाचका ओ विष थूलि धून का ओ जे ओ नारयात

श्रीलक्ष्मी
॥१३॥

केनोसतधायाधायगुविद्याओ नोयकेपूरुषया
धूनकाओपूरुषयचिपयाकायाओथओनूचा
संतयाओतयश्रीकृष्णयाधरियातालपेथथे
दिनप्रतिथओपूरुषयाकेनक्रयायथधेयाक
संयाधर्मनईहलोकसंपरलोकसंसूर्यसंमति

संवा
॥१३॥

लायिओध्वत्तं प्रतिपताधायआहुओतयाज्वाति
नितसेवायाहुवेस्यवायायमामनआदर्शनजेओता
रयाचाकाथ्यधमनवेस्यानंजावयाहुगथ्यंचाहस
पूस्यामियाताआवयायथतेजावसेओत्तमित्ताज
नयानामसक्रियूर्वकंन्याधारमित्ताजनयादोषन

श्रीलक्ष्मी
॥१४॥

दोलहि ॥१००॥ ओं गुनस्वतादना पूर्यामि नंदुत्ता हय
वस्तुनिदाननंतयहनं कुलरक्षाया च केवा ता काय
वृयका ओ वि य कुल धर्म रक्षाया च केहनं महापुंरय
द ओ मि सा ज न्न जू या ओ पू रू य सृ त्पू जूलडा ओ. ओ स
ओ. सं स र्ग न थ व जि व त्या ग या य ध धि ड. प्र स स ध

संवा
॥१४॥

मन्यरलोकसर्वं मूदुमीसा या धर्म महापुंरय थ
थे या क सं मि सा जे न ग धे जू यि धाल सा या त या व
स नं त्रि य का ओ महारत्न नदिन प्र ति ती य का ओ
त यि मा जि इ ति रु वस्तु न का ओ त यि ओ अ ने रु ये
ग नू क्रि या च का ओ त यि ओ नो ल क्ष्मी ग्व सं मि सा

श्रीलक्ष्मी
॥१५॥

जननं न पथे या न सा मोक्षमि सा जननं थ थि रु फल
लायि मो नि धय ध कं धर्म नं लक्ष्मी क रु खं जू लो

नृ४

॥ इति श्री धर्म लक्ष्मी सम्पादनी राणी पुराय कथा

चतुर्थ धाय ॥ ४ ॥ ॥ श्री लक्ष्मी उवाच ॥ हनं धर्म

स के क्षी ले नं दे डा नो धर्म क ल यो ल स्यं क रु यं स्त्री स र्वा

॥१५॥

जनया पुरुषया के से वा या रु फल दे ने धू तो नो ध
र्म नाल तो या मा नि रु सो या या फल गं धे जू यि मो ध
कं लक्ष्मी नं दे रु ध ते लक्ष्मी या आ जा दे रु मो धर्म
नं क रु नो लक्ष्मी दे हने रु ली छि नं मि सा जन न
थ मो पुरुष को धनं सो या पा वनं हा स ति क पू लं श्री

जू

श्रीलक्ष्मी
॥१६॥

विलिखु टिरपालजूवे काँवे काँ सोया पापन यात्रिनिज
याओ जन्म कायि ओ पुरुष यावचन मंडे डाया पाप
खून कान जूयाओ चोनि ओ पुरुष ओ उतिउतरन
न्या डाया पापन आरि यिओ तू धूना भास्यं सि यिओ
नये संतोने सँ खान कान मयान काँ नथ मया कान

संवा
॥१६॥

नजूको नया या पापन धूसा हो ओरि च जूया ओ मेले
तूरुव याओ जुय मालि काओ जन्म कायि ओ मेव या के त्रा
ले बाले चोले सँ दायाओ बोयिओ साहायाओ सि यिओ
हनंथ ओ पुरुष को धन नया ला डाया यापन बाले सँ चो
ले सँ नाग्य मदस्य जुयिओ लिथू हथू यादा सि जूयाओ सि

श्रीलक्ष्मी
॥ १७ ॥

न२

यिओवेसमथासीजयमालिओपरपूरुषयाकेजुयिओ
हनंठओपूरुषयाकेकुदमनिदांनयाकसायाकेहोया
इओकायथओपूरुषयाकेएकचित्तानंसेवायायमा
लतिनकाओवेवहास्यायमालधकंधर्मनंलक्ष्मीया
केओदेसदयका

इति श्री धर्मलक्ष्मी संवाद यापक

सेवा

॥ १७ ॥

लकथापंमोध्याय ॥ ५ ॥ श्रीधर्मउवाच धर्मल
क्ष्मी कइजोसक्ष्मीहनंकातेउहनेसो जातियाधर्म
कर्मन कयायमेलमरुथुओपूरुषयाकेद्वितंठयाल
सूथानेवर्तसेवयाखालमसोस्यंथओपूरुषयाखाल
सोयथयाकलश्रीनारायनजोयापेहनंपूरुष

श्री लक्ष्मी
॥ १८ ॥

दूहासउतोलेमनसेंलाऊवचोनेयकादसीधर्मदऊय
फेललाकथथेयाकहंमिसाजनदेवकर्यदिदासगम
संवासलाका निम्ययधकथनंनिमिररुलजुयि
श्रीज्यासयावसीगुनधूलाश्रीज्ञातिजुयाश्रीविचभ
राजुयावभमात्रंतजुयावजेन्मकारिवथनेनधव
मन्त्र

संवा
॥ १८ ॥

सुरुषविनासूमडु ॥ श्रीधर्मउवाच ॥ श्री लक्ष्मी छल
पोलनंऊहनेयाययार्वकानेथश्रीसायमोचापेले
वियावहोयाथासफरायायायायनथश्रीश्रीश्रीवाय
मालिश्रीसिथेसीतुमयावजुयाश्रीमन्त्रजुयिश्रीथ
श्रीसाचमोचावियाथासमफासाजिलयतिपालया

श्रीलक्ष्मी
॥ १२ ॥

जन्मो मृतवत्स्ववियाभो पुनियालया जन्मफलमहाध
ताध्या जूयिभोनागि जूयिवलि धूज नमसनाम्यमा
मानि जूया वडुवा वत जूया वजना कायिभोहनं ॥ ॥
ह्या चमो चामेलविय याताति लाहिलानं निय काभो
जननवस्त्र कूचिना कावूं सूजात वियाव होयनाल थप
व

संवा
॥ १२ ॥

रिमाननंया कलमं देवया कल्या हि दासं मस्य गर्तसंवास
लाक पुनवा दहनं पितृ कार्जस जिल ह्या चमो चा
वोडा भोत केमाल जोलक्ष्मी जिलनको फल गथेधा
लसा सासत छि १०० दानया इ फलला को स्वर्गवा
सजूयिभोहनं पून क्ष दछता कनेडे इ जिरया के का

श्रीलक्ष्मी

॥१०॥

जन्मदले जन्त नलसा वस्तु का लसा जिमने दा १२ पुले मा
ल जूरोहर्न पुन बा दसी मा दिसा यस वग जिदाम का
यस मने मो वग जिदाम कालसा जिमने दे १२ पुले मा
ले. थते धा को निश्चय न जू यि मो ॥ ॥ ईति श्री धर्म
संवादे पुण कथा समाप्त ॥ ॥ श्री धर्म उ

संवा
॥१०॥

वाच ॥ ॥ श्री लक्ष्मी देहनेहर्न मनूष्या या पूर्व जन्म स
या ज्ञाया पया फलन जू यि मो थर्व कते देहने सिज
ल वस्तु रूपा पायतं कुरु न थि यि मो तसा वस्तु रूपा
पायनं रक्षा य जू यि मो गुरु निन्दा या ज्ञा या पायतं जे
ल जू यि मो कया वस्तु रूपा य पायनं रक्षा लसंसा सीतो

श्रीलक्ष्मी
॥२९॥

यिदु-चा कदयि मोहनं लिलगहील जूयि मोहनं यो नै
सवाटमसिस्पं दूहस्वसिस्पं सिपि मोतो सनपनिनीडा
या इन पापापन या इश्या पालनं लम कस्यं ना मो मखा
स्यसिपि मो कूजातिया के तया मो प्रसंग या इन मो मो स
रनं टिया पापनं मसूचि कठिनदा स्यं सिपी मोहनं

संवा
॥ २९ ॥

कोखा वोरवाडा अया पापनं नरक सचोनी मोथ्यखंरव
मोमवू संशय मूमा ललू मोही पूया पापनं महातरक
सचोनि मो जाकि वा छो पूया पापनं रवूया रवू दे वूले मा
ललू नरवूया पापनं न्या रवूया पापनं दुलरवूया पापनं पू
ले मूटन मोरने रवूया पापनं मन्नं मखा नि मो ता रु शथा

न ३

श्रीलक्ष्मी
॥ १२ ॥

यस वासमदस्यं जूयिं गूरुया त्रो चो त्रो जूया वाय न
कास मयस्यं लिन्न स म्पाप जूया त्रो सिधि त्रो वृंति व
यसंगया त्रो विधा हिन जूयि त्रो राजा या स्त्री यसंग
या तस्या माम त्रो यसंगया इत्थं पापलाक धनसंहो
दरया स्त्री यति सर्वपसंगया तस्या कुलहिन जूया त्रो

संवा
॥ १२ ॥

सिधी त्रो त्वाच नतो त्रो यसंगया तस्या गवल हत्या वृंति
हत्या स्त्री हत्या वाल हत्या ध्यते हत्या या पायला फ र्मे
हने ददाया स्त्री यसंगया तस्या सीतान मदयि विष्पा
धिनी त्रो यसंगया तस्या इष्टालसंवेधादयि त्रो नयि
नि त्रो यसंगया तस्या लाना धीं त्रो सात्वमीसा वृपसं
दयि

श्रीलक्ष्मी
॥२३॥

गयातसात्माका चस्य चासूयं नतिदुःखसि स्यंति
यिन्नोसमस्तलो कयालीयति शन्नोपसंगयातसा
काकचिकुराडु फसलं खधते धयापापकुण्डनर
कसंकलाहिदो चोतिन्नो न वस्य धतेपापलाकमि
साजननं याङ्गफलपीवन्नोहं व प्रसंगयातसी धतेपा

संवा
॥१३॥

वृ२

पनंल्लेखलपिन्नोतिभ्वये नहंनं पुरुषनचाह लयेलस
प्रसंगयातसां धतेपापनं पुनिनीभ्वयनं धतेसेया
नूका नो चोति वहनं धमेजसकाया निमितिर्न
छोखा वोरबायाऊयापनं न्हसयो तस्य कोच नंउलकी
वमनूष्यनंधर्मकर्मयायमाल ॥ ॥इति श्री धर्म
वमनूष्यलोकनधल लपेमालहनं नूमितं मास

रघुयापपनं प्यान न न

श्रीलक्ष्मी

॥ १५ ॥

उगकर्मनं महोदयदिगम्बरज्यामोर्वेनूलासूर्यभाकास
शंभुमलयं जुलंथतेसेया वमनूयलो कनं निजिजिक
मसौसंदुवियमालगुरुयुत्रजुयि वथपनिसकेसेवाया
यमालगूरुयावचनमडेतेदिक्षितकर्मयाय जज्ञयाय
गुरुउपरान्तस्त्रनं मदुहनंतीर्थगमनयाय खानयाय

संवा

॥ १५ ॥

का

नूयलो कनंथल्लाडाथ्यं निद्रु कर्मसंदुवियमाल
थतेनं साधुजनवसंगयाय मालधकाधमनंलक्ष्मी
कडन जूलो ॥ इति श्रीधर्मश्रीलक्ष्मीसंख्यादिलक्ष्मी
युगनेश्वरसाध्यायः ॥ ४ ॥ समाप्त २१५
॥ श्रीयोगेश्वरराज ४ शुभः ॥ ॥

आर्य समाज

४०५

ASMA ARCHIVES